दिनांक :- 22-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज खरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- धर्म

जैन धर्म के पतन के कारण :—

जाति प्रथा के दर्शन को बनाए रखना। अहिंसा पर कुछ ज्यादा ही के स्तर तक बल देना, नियमों की कठोरता, उचित राज्याश्रय का अभाव, जैन धर्म में अनेक विभाजन, संगठनात्मक कमजोरी, ब्राह्मण धर्म का उत्थान, कृषि कार्य की आलोचना।

जैन धर्म की भाषा एवं कला :—

प्रारंभिक जैन आचार्यों ने भी संस्कृत भाषा को छोड़कर अर्द्ध मागधी भाषा को अपनाया।

अनेक जैन ग्रंथों की रचना शौरसेनी भाषा में हुई। इसने उत्तर भारत में अपभ्रंश, गुजराती, राजस्थानी और पुरानी हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसी तरह दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मराठी भाषा के विकास में भी जैन धर्म ने आचार्यों के माध्यम से विशिष्ट भूमिका निभाई।

कला :- प्रारंभ में जैनियों ने स्तूपों का निर्माण किया। परवर्ती काल में मूर्तिकला एवं मंदिरों का विकास हुआ।

पटना के लोहानीपुर से प्राप्त जैन मूर्ति आरंभिक मूर्तियों में से एक है। कुषाण काल में मथुरा जैन कला का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था।

गुप्तकाल में जैन कला की मथुरा शैली उन्नत अवस्था में थी।

राजस्थान में आबू पर्वत पर वास्तुपाल एवं तेजपाल ने संगमरमर से दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।

Scanned with CamScanner

सौराष्ट्र मे शत्रुंजय की पहाड़ी पर अनेक जैन मंदिर बनवाये गए। इनमें आदिनाथ का मंदिर विख्यात है।
झांसी के देवगढ़ और राजस्थान के ओसिया के अभिलेखो में शांतिनाथ और महावीर के जैन मंदिरो का उल्लेख है।
जोधपुर (राजस्थान) के निकट रीनकपुर मे भी एक जैन मंदिर का अवशेष मिला है।
चित्तौड़ के किले मे एक जैन स्तंभ (टावर) प्राप्त हुआ है।
भागलपुर के मंदार पर्वत पर जैन मंदिर प्राप्त हुआ है।
जैनो ने चित्रकला के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
पहली बार इसने चित्रकला में तालपत्र का प्रयोग किया।
जैनियो मे चार वरो का सिद्दान्त, जिसमे शिक्षा, अन्न, चिकित्स तथा आवास होता था। काफी लोकप्रिय था।
मथुरा मे सन् 750 ई० मे पुज्यपाद के शिष्य वज्रमणि द्वारा एक द्रविड़ संघ की स्थापना की गई।

श्रवणबेलगोला के समीप चामुण्डराय द्वारा बाहुबलि की विशाल जैन प्रतिमा गोमतेश्वर नाम से बनवाई गई।

बौद्ध धर्म :—

बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतमबुद्ध थे। गौतम इनके गोत्र का नाम था जबकि इनका मूल नाम सिद्धार्थ था।

इनका जन्म 563 ई० पूर्व में कपिलवस्तु के लुम्बिनी (आधुनिक रूम्मिनदेई) में हुआ था।

पिता का नाम शुद्धोधन था जो कपिलवस्तु के शाक्य गण का प्रधान था। माता का नाम महामाया था जो कोशल राज्य की राजकुमारी थी। बाल्यावस्था में ही सिद्धार्थ को मातृवियोग से गुजरना पड़ा। अंततः सिद्धार्थ को मौसी प्रजापति गौतमी ने उनका लालन-पालन किया।

कालदेवल तथा ब्राह्मण कौण्डिल्य ने भविष्यवाणी की थी कि वह या तो चक्रवर्ती शासक बनेगा अथवा महान संन्यासी।

चार दृश्यों ने गौतम के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव उत्पन्न किया।

① बूढ़ा व्यक्ति ② बीमार व्यक्ति ③ एक मृत व्यक्ति की अर्थी ④ एक संन्यासी।

गौतम बुद्ध को 16 वर्ष की आयु में ही शाक्य कुल की ही कन्या यशोधरा (बिम्बा, गोपा, भद्रकच्छना) से विवाह किया गया जिनमें उन्हें एक पुत्र 'राहुल' भी प्राप्त हुआ। सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग किया। इस घटना को महाभिनिष्क्रमण कहा जाता है। महाभिनिष्क्रमण का प्रतीक चिन्ह घोड़ा तथा संबंधित पशु भी घोड़ा ही बताया गया है।

सर्वप्रथम उन्होंने वैशाली में अलार कलाम का शिष्यत्व ग्रहण किया जहाँ से उन्होंने तप की क्रियाओं तथा उपनिषद प्रतिपादित ब्रह्म विद्या की शिक्षा प्राप्त की परंतु उनको संतुष्टि नहीं मिली। अलार कलाम सांख्य दर्शन के विद्वान थे फिर उन्होंने गया में उद्दक रामपुत्र का शिष्यत्व लिया। यहाँ उन्होंने योग की शिक्षा ली परंतु यहाँ भी उन्हें संतोष नहीं मिला।

Scanned with CamScanner

अंततः छः वर्ष की कठोर साधना के उपरांत 35 वर्ष की आयु में आठवें दिन वैशाख पूर्णिमा की रात को एक पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। उरुवेला नामक स्थान पर निरंजना नदी के तट पर है। इस समय से वे बुद्ध नाम से विख्यात हुए। वैशाख पूर्णिमा बौद्ध धर्म में तीन दृष्टियों से पवित्र मानी जाती है।

① बुद्ध का जन्म ② सम्बोधि प्राप्ति ③ महापरिनिर्वाण

माना जाता है कि सर्वप्रथम उन्होंने तपस्सु और भल्लिक नामक दो व्यापारियों को दीक्षा दी।

गौतम बुद्ध ने वर्तमान उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिले में स्थित सारनाथ के ऋषिपत्तन मृगदाव में अपना प्रथम उपदेश उन्हीं पाँचों साथियों को दिया जो उन्हें गया से छोड़ कर चले आये थे। इस घटना को 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के नाम से जाना जाता है। सारनाथ में ही बुद्ध ने संघ की स्थापना की जिसमें सर्व

प्रथम बुद्ध के पाँच साथी तथा बनारस के श्रेष्ठि यश और उसके पचास साथी थे।

आगे उन्होंने एक हजार भिक्षुओं का संघ बनाया। जिसके नेता कश्यप थे। इस संघ में शारीपुत्र तथा मोग्गलन जैसे पुरोहित भी शामिल थे।

आगे उन्होंने एक हजार भिक्षुओं का महात्मा बुद्ध ने अपने धर्मोपदेश के प्रचार के लिये दूरस्थ प्रदेशों की यात्रा की। सम्बोधि प्राप्ति के उपरांत पश्चिम में कुरुदेश उत्तर में कपिलवस्तु, तथा दक्षिण में कौशांबी तक की यात्रा की। उन्होंने पूरब सम्बोधि प्राप्ति के उपरांत वे गया से सर्वप्रथम काशी (सारनाथ) पहुँचे काशी से बुद्ध उरुवेला पहुँचे, वहां से राजगृह पहुँचे जहाँ मगध नरेश बिम्बिसार स्वंय उनका उपदेश सुनने पहुँचे। फिर भगवान बुद्ध कपिलवस्तु पहुँचे तथा वहां से वैशाली आये।

Scanned with CamScanner